उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय दो

व्याख्या की तैयारी करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय.....1

II. पवित्र आत्मा पर निर्भरता.....1

क. प्रेरणा 2

1. दिव्य स्रोत 5
2. मानवीय तरीके 8

ख. प्रबोधन 9

III. मानवीय प्रयासों की आवश्यकता.....10

क. महत्व 11

ख. प्रभाव 12

1. श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण 13
2. परस्पर व्यवहार 13
3. अनुभव 14

IV. सारांश 15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय दो
व्याख्या की तैयारी करना

परिचय

जब भी कभी हम एक परियोजना का आरम्भ करते हैं, तो सही तरह की तैयारी करना बुद्धिमानी है। लूका के सुसमाचार में, यीशु स्वयं इस विचार को वर्णित करते हैं जब वे एक ऐसे व्यक्ति का विवरण देते हैं जो कि एक मीनार का निर्माण करना चाहता था, परन्तु वह इसे पूरा करने में असफल हो जाता है क्योंकि उसने इसकी तैयारी नहीं की थी। ठीक है, कुछ इस जैसा मिलता जुलता सत्य है जब पवित्रशास्त्र की व्याख्या की बात आती है। बाइबल के भाव को प्रकट करना एक ऐसी जटिल परियोजना है जिसमें हमारे पूरे जीवन में निरन्तर क्रियाशीलता और विस्तार करते रहने की आवश्यकता होती है। इसलिए हमें यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि हम बाइबल की व्याख्या सही तरीकों से करने के लिए तैयार हैं।

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव की हमारी इस श्रृंखला के इस दूसरे अध्याय को हमने इसी खोज के लिए समर्पित किया है कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें कैसे बाइबल की व्याख्या करनी चाहिए। और हमने इस अध्याय का शीर्षक "व्याख्या की तैयारी करना" दिया है क्योंकि इससे पहले की हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करें और इसे पढ़ें हम कुछ ऐसी बातों के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जो कि हमारे लिए उपयोगी होंगी।

इस अध्याय में, हम दो महत्वपूर्ण तत्वों को व्याख्या में हमारी तैयारी के लिए देखेंगे। सबसे पहले, हम अपने ध्यान को पवित्र आत्मा की सेवकाई पर निर्भरता के ऊपर केन्द्रित करेंगे। और फिर दूसरा, हम हमारे स्वयं के मानवीय प्रयासों की आवश्यकता को सम्बोधित करेंगे। आइए सबसे पहले हम पवित्र आत्मा पर निर्भरता को देखें।

पवित्र आत्मा पर निर्भरता

जब हम पवित्र आत्मा का उल्लेख करते हैं, तो हम सभी जानते हैं कि विभिन्न मसीही विश्वासी विभिन्न तरीकों से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। कदाचित् हो सकता है कि आप कलीसिया की ऐसी शाखा से सम्बन्धित हों जो कि आत्मा के वरदानों – हमारे प्रतिदिन के जीवन में उसकी उपस्थिति और सशक्तिकरण के ऊपर ज्यादा जोर देती हो। या हो सकता है कि आप कलीसिया की ऐसी शाखा से सम्बन्धित हों जो कि विश्वासियों के प्रतिदिन के जीवन में आत्मा की गतिविधियों को कम कर देती हो। ठीक है, हम पवित्र आत्मा के पवित्रशास्त्र की व्याख्या में जो कुछ कहने वाले हैं वह हमें दोनों अर्थात् सुनिश्चित करेगा और हममें से प्रत्येक को चुनौती देगा। जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं, तो हमें अपने पूरे विवेक से आत्मा की सेवकाई के अधीन होना चाहिए, परन्तु बाइबल स्वयं हमें शिक्षा देती है कि हम ऐसा विशेष तरीके से करें। पवित्र आत्मा की अनदेखी करना मूर्खता का शिखर बिन्दु है; परन्तु हमें उसके ऊपर इस तरह से ध्यान देना चाहिए जैसा कि बाइबल हमें निर्दश देती है। अब जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो पवित्र आत्मा पर निर्भर होने का क्या अर्थ होता है।

अधिकांश इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी विश्वासी सैद्धान्तिक रूप से यह स्वीकार करते हैं कि पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परन्तु आधुनिक शैक्षणिक पुस्तकें और बाइबल व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतन्त्र विज्ञान के ऊपर लिखे हुए व्याख्यान अक्सर पवित्र आत्मा की भूमिका के लिए लगभग कोई ध्यान नहीं देते हैं। इसकी बजाए, हम बाइबल की व्याख्या के साथ सामान्य तौर पर ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो यह एक अव्यक्तिक घटना हो, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें हम किसी एक मूलपाठ को समझने के लिए सिद्धान्तों या तरीकों की एक सूची लागू कर देते हैं। परन्तु बाइबल के दृष्टिकोण से पवित्रशास्त्र का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

व्याख्याशास्त्र या व्याख्या, एक बहुत ही व्यक्तिगत् विचार है क्योंकि इसमें मानवीय व्याख्याकारों और पवित्र आत्मा जो व्यक्ति है का आपसी वार्तालाप सम्मिलित है।

व्याख्या में पवित्र आत्मा पर विवेकपूर्ण निर्भरता कम से कम दो कारणों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, पवित्र आत्मा ही पवित्रशास्त्र की प्रेरणा का स्रोत था। और दूसरा, पवित्र आत्मा ही मानवीय व्याख्याकारों को प्रबोधन अर्थात् प्रकाशन प्रदान करता है। आइए सबसे पहले प्रेरणा के विषय की ओर मुड़ें।

प्रेरणा

मुझे स्मरण है एक बार मुझे एक सुप्रसिद्ध लेखक से मुलाकात करने का अवसर मिला था जिसकी पुस्तकों ने मुझे मेरे मसीही जीवन के कठिन समय में सहायता की थी। मैं उसके साथ बैठने और उसे सब कुछ बताने के लिए बहुत ज्यादा रोमांचित था कि कैसे उसकी पुस्तक मेरे लिए कितना महत्व रखती थी। हमारे वार्तालाप में एक बार, मैंने उसे एक विशेष लाभदायक आत्मबोध के बारे में बताया जिसे मैंने उसकी एक पुस्तक से प्राप्त किया था। परन्तु मैं उस समय आश्चर्यचकित हो गया, जब उसने मेरी ओर देखा और मुझसे कहा कि, "तुमने सब कुछ गलत प्राप्त किया है! मैंने ऐसा बिल्कुल भी नहीं लिखा!" ठीक है, उसके ऐसा कहने से, मैं लज्जित हो गया। परन्तु मुझे स्मरण है मैं लम्बी साँस ले रहा था और उससे यह स्वीकार कर रहा था कि, "यह ठीक है, मैं सोचता हूँ कि जिस व्यक्ति ने उस पुस्तक को लिखा वह इसका क्या अर्थ होता मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानता है।"

ठीक कुछ इसी तरह से, कई अर्थों में, यह बाइबल के लिए भी सत्य है। पवित्रशास्त्र का प्रत्येक शब्द परमेश्वर के पवित्र आत्मा की प्रेरणा से रचित है। और इस अर्थ में, वही पवित्रशास्त्र का लेखक हुआ। परिणामस्वरूप, केवल यही तर्क सामने आता है कि हमें उसी से ही उसकी पुस्तक में से आत्मबोध को प्राप्त करना चाहिए।

बहुत ही अधिक मौलिक भाव में, प्रेरणा का सिद्धान्त यह कहता है कि:

पवित्र आत्मा ने मानवीय प्राणियों को परमेश्वर का प्रकाशन जैसे पवित्रशास्त्र लिखने के लिए उभारा और उनके कार्य का इस तरीके से निरीक्षण किया कि उनके लेख अचूक बन गए।

पतरस ने जिस तरह से इस विचार को प्रकट किया है उसे 2 पतरस 1:20-21 में से सुनिए:

पर पहिले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20-21)।

इस संदर्भ में, पतरस ने कहा है कि बाइबल की सभी भविष्यद्वाणियाँ पवित्रआत्मा से उत्पन्न हुई हैं और आत्मा ने मानवीय प्राणियों को परमेश्वर के प्रकाशन को लिखने के लिए उभारा। ये प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि उन्होंने पूर्णतया सत्य को ही लिखा, और यह कि मानवीय लेखकों के शब्द भी परमेश्वर के शब्द ही थे। और 2 तीमुथियुस 3:16 में, पौलुस इसी तरह से सारे पवित्रशास्त्र को प्रेरित होने का संकेत देता है।

बाइबल एक जैविक सत्य है, जो कि आरम्भ से लेकर अन्त तक आपस में सम्बद्ध, एक अद्भुत पुस्तक है जो कि जीवन का वचन है, जीवन पर आधारित है, जो कि जीवन की प्रत्येक आवश्यकता का प्रबन्ध करती है। यह सत्य है क्योंकि इसका लेखक पवित्रआत्मा है और यह पवित्रआत्मा के लिए असम्भव है कि वह स्वयं के ही विरुद्ध जाए या स्वयं का ही परस्परविरोधी हो.... यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि यदि आप यिर्मयाह या पौलुस या ओबद्याह या योना को पढ़ें; उन सभों ने विभिन्न शब्दों को प्रयोग किया है, परन्तु इन सब शब्दों के पीछे एक ही आत्मा कार्यरत है, क्योंकि एक ही आत्मा ने उन शब्दों को प्रेरित किया जिन्हें चुना गया था

- रेव्ह. डॉ स्टीफन टोंग (अनुवादित)

मसीह और उसके चेले इस विचार के प्रति समर्पित थे कि पवित्रआत्मा ने ही पवित्रशास्त्र के लेखकों को प्रेरित किया। और वे जिन्होंने मसीह का अनुसरण करने का प्रयास किया उन्होंने ने सदैव कुछ अर्थों को स्वीकार

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

किया है जिसमें पवित्रशास्त्र प्रेरित हुआ था। परन्तु फिर भी, वे जो मसीही विश्वास का अंगीकार करते हैं, वे विभिन्न तरीकों से प्रेरणा की प्रकृति को समझने की इच्छा रखते हैं।

हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, हम अपने ध्यान को प्रेरणा के तीन दृष्टिकोणों के ऊपर लगाएंगे जो कि आधुनिक कलीसिया में प्रमुखता से पाए जाते हैं। सबसे पहला, कुछ लोग यह विश्वास करते हैं जिसे हम प्रेरणा का "छायावादी" दृष्टिकोण कह कर पुकारते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखकों को उसी तरह से प्रेरित किया जैसे लौकिक कवि या संगीतकार अपने साहित्य को लिखने के लिए उभारे जाते थे। इस दृष्टिकोण में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर का अचूक सत्य नहीं होता है, परन्तु इसमें केवल मानवीय लेखकों के व्यक्तिगत् चिन्तन और विचार होते थे।

दूसरा, अन्य मसीही विश्वासियों ने यह विश्वास किया जिसे हम "यांत्रिक" प्रेरणा कह कर पुकार सकते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, बाइबल के लेखक उस समय अपेक्षाकृत निष्क्रिय थे जब उन्होंने पवित्रशास्त्र को लिखा। परमेश्वर के आत्मा ने अनिवार्य रूप से श्रुतिलेखन के माध्यम से बाइबल को लिखने का कार्य करवाया और लेखकों ने जो कुछ कहा गया था उसे लेखबद्ध कर लिया।

तीसरा, अधिकांश, इवैन्जेलिकल मसीही विश्वासी यह पुष्टि करते हैं कि आत्मा का प्रेरणा का कार्य "जैविक" था। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों को लिखने के लिए उभारा और उनके शब्दों का निरीक्षण और निर्देशन किया। परिणामस्वरूप, पवित्रशास्त्र के शब्द परमेश्वर के शब्द हैं। इसी समय, पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों के व्यक्तित्व, अनुभवों, दृष्टिकोणों और अभिप्रायों का प्रयोग किया जब वह उनके द्वारा लिखे जाने का निरीक्षण कर रहा था। इसलिए, पवित्रशास्त्र के शब्द मानवीय लेखकों के भी शब्द हैं। यह तीसरा दृष्टिकोण पवित्रशास्त्र की प्रेरणा की प्रकृति के बारे में उसकी स्वयं की गवाही को सबसे उत्तम तरीके से दर्शाता है।

> **पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना एक उत्तम आकर्षक प्रक्रिया है, क्योंकि यह हजारों साल के मध्य कई लेखकों के द्वारा निर्मित की गई है, और आप इन विशेष चरित्रों को जिस तरह से उन्होंने लिखा है, जिस तरह से वे अपने चारों ओर के लोगों के साथ सम्बन्धित होते हैं, और जिस भाषा को वे प्रयोग करते हैं, उसमें बहते हुए बाहर आते हुए देखते हैं। और इसलिए, उनका व्यक्तित्व परमेश्वर के वचन के लिए अति महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने इसमें कई विभिन्न तरीकों को प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, आपके पास एक याजक हैं जो लिखता है, आपके पास एक किसान है जो लिखता है, एक चरवाहा है जो लिखता है, आपके पास एक राजा है जो लिखता है, आपके पास एक आयुर्विज्ञानी चिकित्सक है जो लिखता है, और आपके पास एक ऐसा व्यक्ति भी है, जिसके पास हमारी संस्कृति में "इब्रानी महाविद्यालय" से पीएच. डी. होती, जो पौलुस प्रेरित है, जिसके पास पुराने नियम की अभूतपूर्व समझ के साथ ही यूनानी संस्कृति और यूनानी भाषा है और वह यूनानी भाषा को प्रयोग करने में सक्षम है और वह उसके समय की किसी भी भाषा से ज्यादा उत्तम तरीके से इस भाषा में धर्मवैज्ञानिक विचारधारा की अभिव्यक्ति को पूर्ण औचित्य के साथ इसमें से बाहर निकालने में सक्षम है।**
>
> **-डॉ हावर्ड ऐरिच**

उदाहरण के लिए, पतरस जिस तरह से 2 पतरस 3:15 में प्रेरणा की जैविक प्रकृति के बारे में विवरण देता है उसे सुनिए:

> **हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला तुम्हें लिखा है (2 पतरस 3:15)।**

इस संदर्भ में पतरस ने यह दर्शाया है कि कैसे पौलुस के पत्र को स्वीकार किया जाना चाहिए। एक तरफ तो, उसने ऐसा कहा कि, "पौलुस ने लिखा।" इस तरह, पतरस ने यह पुष्टि की कि पौलुस की इन पत्रों को लिखने में भागीदारी थी। परन्तु दूसरी तरफ, पतरस ने बस ऐसे ही इन पत्रियों को पौलुस की ओर से लिखा हुआ

नहीं कहा। इसकी बजाए, उसने यह टिप्पणी दी कि पौलुस ने "उस ज्ञान के अनुसार लिखा जो उसे परमेश्वर ने दिया था।" पवित्रआत्मा के मार्गदर्शन के कारण पौलुस के पत्रों ने परमेश्वर के ज्ञान का प्रतिनिधित्व किया।

> **परमेश्वर के वचन के बारे में यह सत्य है: पवित्रशास्त्र का प्रत्येक शब्द पवित्र आत्मा से प्रेरित है। यह परमेश्वर के वचन के बारे में भी सत्य है: उनमें से प्रत्येक शब्द एक वास्तविक मानवीय प्राणी के द्वारा लिखा गया था, और अद्भुत तरीके से लिखा गया था, परमेश्वर की प्रभुता ने बाइबल के इनमें से प्रत्येक लेखकों के वरदानों और अनुभवों को ऐसे संचालित किया जिसके परिणामस्वरूप उनका व्यक्तित्व, उनकी लेखन शैली पूर्णतया बाहर निखर कर सामने आ गई, जबकि उसी समय बाइबल पूर्णतया परमेश्वर का वचन है। उदाहरण के लिए, इसलिए जब आप यिर्मयाह का अध्ययन कर रहे होते हैं, तो आप लोगों के प्रति उसके शोक और आवेश के भाव को पाते हैं; जब आप लूका का सुसमाचार पढ़ते हैं, तो आप उसकी सतर्क आँखों से दिए हुए आयुर्विज्ञान के विवरणों, और इतिहास के प्रति उसका प्रेम और सटीक इतिहास को व्यक्त किया हुआ पाते हैं। मेरे कहने का अर्थ यह है कि, बाइबल के इन लेखकों का व्यक्तित्व और उनका अनुभव सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में चमकता है, परन्तु ऐसा परमेश्वर के वचन में किसी भी तरह से परमेश्वर के अधिकार और प्रेरणा और परमेश्वर की सामर्थ्य को खोए बिना होता है।**
>
> **-डॉ फिलिप्प रेयकेन**
>
> **ठीक है, जब कोई पवित्रशास्त्र का अध्ययन करता है तो वह देख सकता है कि लेखन शैलियों में भिन्नता है और लेखक स्वयं के वरदानों को उपयोग कर रहे हैं क्योंकि विभिन्न लेखक विभिन्न तरीकों से स्वयं को व्यक्त करते हैं, और विभिन्न तरह के चुनाव से लेखक अपनी लेखन सामग्री को प्रस्तुत करने के लिए उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, सुसमाचार में हमारे पास मरकुस है जो क्रियात्मक दृश्यों के साथ ज्यादा दिखाई नहीं देता है...या इनके साथ कुछ ज्यादा नहीं करता है, इसकी अपेक्षा में, वह इन क्रियात्मक दृश्यों के साथ अपने प्रवचन को ज्यादा से ज्यादा कम रखता है, जबकि यूहन्ना के सुसमाचार में ये प्रवचन पूरी तरह से दिए गए हैं, जो कि विभिन्न तरह की रूचियों को दर्शाते हैं। इस तरह से ये लेखक अपनी लेखन शैली, अपनी स्वयं की पृष्ठभूमि, अपनी स्वयं की अभिव्यक्ति के अनुसार लिख रहे थे, और यह उन विभिन्नताओं से बिल्कुल स्पष्ट है जो कि हम उन क्षेत्रों में लिखी हुई विभिन्न पुस्तकों में देखते हैं। परमेश्वर उन्हें जो कुछ वे कहते थे और जो कुछ उन्होंने कहा उस पर खड़े रहने के लिए निर्देशन देने के भाव में प्रेरित नहीं कर रहा था, परन्तु वह उन्हें उनके तरीके से इन्हें व्यक्त करने दे रहा था।**
>
> **-डॉ डारेल एल. बोक**

हम जैविक प्रेरणा के दो महत्वपूर्ण पहलूओं के ऊपर स्पर्श करेंगे जो हमें व्याख्या करने के हमारे कार्य के लिए अनुकूल बनाने में हमारी सहायता करेंगे: सबसे पहिला वह सच्चाई कि पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र का दिव्य स्रोत है; और दूसरा, वह सच्चाई कि उसने मानवीय तरीकों को पवित्रशास्त्र निर्मित करने के लिए उपयोग किया। आइए सबसे पहिले हम इस विचार की ओर देखें कि आत्मा ही बाइबल का अन्ततोगत्वा दिव्य स्रोत है।

दिव्य स्रोत

वह जिसने सारे पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया, उस पवित्र आत्मा को बाइबल के अर्थ और जिस तरीके से इस अर्थ को सम्प्रेषित किया जाता है का अन्तरंग ज्ञान है। इसलिए, पवित्रशास्त्र की व्याख्या की तैयारी में पवित्रआत्मा ही इसका अन्तिम लेखक है के साथ व्यक्तिगत तौर पर निपटारा करना सम्मिलित है। हमें पवित्रशास्त्र के पास विनम्रतापूर्वक दृष्टिकोण से, पूरी अधीनता के साथ आना चाहिए।

> **मैं सोचता हूँ कि, बाइबल को गहन, पारंगत रूप से समझने के लिए, पवित्रआत्मा पर निर्भर होना अति आवश्यक है। यह स्पष्ट है, मैं सोचता हूँ कि, बाइबल के सन्देश को जैसे वह लिखा हुआ है वैसे ही समझने के लिए पवित्रआत्मा पर निर्भर होना किसी के लिए आवश्यक नहीं है। यदि ऐसा होता तो, बाइबल का कोई सुसमाचारीय कार्य ही न होता। परन्तु इसे गहनता से समझने के लिए, यहाँ पर इस सोच के अच्छे**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कारण हैं कि पवित्रआत्मा पर निर्भर होना नितान्त महत्वपूर्ण है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इसका कारण यह है कि कलीसिया विश्वास करती है, और मैं उसके इस दावे से निश्चित ही सहमत हूँ, कि पवित्रआत्मा ने पवित्रशास्त्र के लेखकों को प्रेरित किया। और इसलिए पवित्र आत्मा इन लेखकों के द्वारा क्या कहने की इच्छा रखता है को पूरी तरह समझने के लिए, हमें जैसे यह लिखा हुआ है, उसी रूप में, इसके आत्मिक स्रोत के साथ इसके सम्पर्क में रहना होगा।

-डॉ डेविड आर बाऊर

कई अवसरों पर, पवित्रशास्त्र के साथ व्यवहार करते समय बाइबल के लेखकों ने खुलेआम और परोक्ष में पवित्र आत्मा की प्रेरणा को स्वीकार किया है। मानवीय लेखकों की भूमिका को बिना नकारे हुए, उन्होंने यह स्वीकार किया है कि पवित्र आत्मा ही पवित्रशास्त्र का अन्ततोगत्वा लेखक है।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 4:25 में, पतरस और यूहन्ना ने कलीसिया को भजन संहिता 2 के अंगीकार में यह कहते हुए मार्गदर्शन दिया:

तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा (प्रेरितों के काम 4:25)।

कुछ इसी तरह से, इब्रानियों 3:7-8 भजन संहिता 95:7 के बारे में कुछ इस तरीके से कहता है कि:

सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है, "कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो। तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था" (इब्रानियों 3:7-8)।

इन और कई अन्य संदर्भों में, बाइबल के लेखकों ने पवित्र आत्मा को एक प्रेरणा देने वाले के रूप में पहचान की है, और इसलिए, पवित्रशास्त्र का अन्ततोगत्वा वही लेखक है। और वे प्रेरणा की इस समझ के ऊपर निर्भर हुए जब उन्होंने स्वयं को अध्ययन करने, व्याख्या करने और पवित्रशास्त्र को जीवन में लागू करने के लिए तैयार किया।

पवित्रशास्त्र के दिव्य स्रोत होने का एक सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ बाइबल का निर्विवाद तौर पर सत्यवादी स्वरूप होना है। दुर्भाग्य से, समय समय पर, सही अर्थ देने वाले लोग भी यह तो कहते हैं कि पवित्रशास्त्र की प्रेरणा में आत्मा की भागीदारी है, परन्तु वे यह पुष्टि नहीं करते हैं कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को सभी तरह की त्रुटियों से संरक्षित किया। परन्तु सुनिए यीशु ने पवित्र आत्मा के बारे में यूहन्ना 14:16-17 में क्या कहा है:

पिता... तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे - अर्थात् सत्य का आत्मा (यूहन्ना 14:16-17)।

जब यीशु ने पवित्र आत्मा को "सत्य का आत्मा" कह कर पुकारा, तो उसने यह संकेत दिया कि पवित्र आत्मा पूर्णतया सत्य है। इसलिए, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि पवित्रशास्त्र भी जो आत्मा की प्रेरणा से रचा गया पूर्णतया सत्य है। वे झूठ नहीं बोलते हैं; वे स्वयं में विरोधाभास उत्पन्न नहीं करते हैं। और इसलिए, पवित्रशास्त्र के लिए हमारी तैयारी का एक हिस्सा पवित्र आत्मा की पूर्ण विश्वनीयता की पुष्टि करने और उस पवित्रशास्त्र में जिसे उसने प्रेरित किया है में होनी चाहिए।

पौलुस तीमुथियुस को कहता है कि परमेश्वर का वचन प्रेरित था – अर्थात् *थियोफिनेटेस* – यह परमेश्वर द्वारा मुँह से बाहर निकाला हुआ था। और यदि यह मुँह से परमेश्वर द्वारा बोला गया था, तब हम जानते हैं कि इसका स्रोत एकदम सिद्ध है, इसका स्रोत न चूकने वाला है, और जो कुछ इसमें से बाहर निकल कर आता है वह सिद्ध और न चूकने वाले की समानता में होना चाहिए। फिर, तब, यह प्रेरणा होती है, यदि आत्मा ने प्रेरित किया है, और यदि आत्मा अब मुझमें वास करता है, जब मैं परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता हूँ, तो मुझे आत्मा के द्वारा दिए हुए प्रबोधन और समझ में ही रूकना और भरोसा करना चाहिए, क्योंकि उसने इसे इस तरीके से प्रेरित किया है कि मेरा अध्ययन इस समझ में उस व्यक्ति के ऊपर आधारित है जिसने सबसे पहले स्थान पर वचन को प्रेरित किया है। एक पुस्तक के लेखक का शिक्षक होने से ज्यादा उत्तम कोई और नहीं हो सकता है, और पुस्तक का लेखक आत्मा है। और इसलिए, जब वह शिक्षक जो हमारे मनों को प्रबोधित करता है आत्मा है तो यहाँ उसके अलावा जो कुछ कहा गया है, जो

कुछ प्रेरित किया गया है उसकी उत्तम समझ स्वयं शिक्षक के और कोई नहीं दे सकता है, जिसने सबसे पहले इसे लिखा।

-डॉ मिगुएल नुनेज (अनुवादित)

हिप्पो के बिशप, ऑगस्तीन, ने अपने पत्र क्रमांक 82 के, अध्याय 1, के पैरा सँख्या 3 में अपने दृढ़ विश्वास को इस तरह से अभिव्यक्त किया है, जहाँ उसने इन निम्न शब्दों को लिखा है:

मैंने पवित्रशास्त्र की नियमीकृत पुस्तकों के प्रति अधीन होने के सम्मान और श्रद्धा को सीख लिया है: केवल इन्हीं में मैं सबसे ज्यादा दृढ़ विश्वास करता हूँ कि इनके लेखक पूरी तरह से त्रुटिरहित थे।

ऑगस्तीन के शब्द आरम्भिक कलीसिया में पवित्रशास्त्र की विश्वनीयता के प्रति प्रचलित दृश्य का वर्णन करते हैं और बाइबल में सिखाए हुए दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करते हैं।

अब, प्रत्येक जिसकी पहचान बाइबल के साथ है वह यह जानता है कि बाइबल में काफी सारे हिस्से ऐसे हैं जो कि यहाँ तक कि उत्तम व्याख्याकार को भी चुनौती दे देते हैं। समय समय पर, ऐसा जान पड़ता है कि पवित्रशास्त्र विज्ञान, हमारे व्यक्तिगत् अनुभवों और यहाँ के पवित्रशास्त्र के अन्य संदर्भों के विरोधाभास में है। हमें कैसे इन अभासित समस्याओं से निपटना चाहिए? ठीक है, व्याख्याकारों के पास इस तरह के विषयों के लिए विभिन्न तरह के तरीके होते हैं। और अधिकांश, उनके समाधान में भिन्नता पवित्रशास्त्र के चरित्र के कारण नहीं, वरन् व्याख्याकार के परमेश्वर के प्रति व्यवहार के कारण आती है।

एक तरफ तो, वे जो यह इन्कार करते हैं कि पवित्र आत्मा ने ही अधिकारिक तौर पर बाइबल को प्रेरित किया बाइबल की व्याख्या आलोचनात्मक तरीके से करते हुए, अपनी स्वयं की समझ को आत्मा के अधिकार के ऊपर उठाते हैं। दूसरी तरफ, वे जो आत्मा की अधिकारिक प्रेरणा को स्वीकार करते हैं बाइबल का अध्ययन समर्पित तरीके से करते हुए, यह अपेक्षा और अनुमान लगाते हुए करते हुए कि यह सत्य और अपने में सामंजस्यपूर्ण है, यहाँ तक तब भी जब वे इसकी विश्वनीयता को प्रदर्शित या प्रमाणित नहीं कर पाते हैं।

जब हम बाइबल के पास आते हैं तो हम बस केवल किसी अन्य मानवीय पुस्तक के पास नहीं आते हैं। हम एक ऐसी पुस्तक के पास आते हैं, जो कि अद्भुत तरीके से परमेश्वर के द्वारा प्रेरणा प्रदत है। इसका अर्थ यह हुआ है कि हम बाइबल को बस यों ही नहीं पढ़ते जैसे कि अन्य किसी पुस्तक को पढ़ा जाता है। अब ऐसा कहना चाहिए कि, परमेश्वर ने स्वयं को हमारी भाषा में, हमारी शैली में सम्प्रेषित किया है, इसलिए हम उस बिन्दु से आरम्भ करते हैं जहाँ पर सरल साहित्यिक व्याख्या होती है। परन्तु यदि हम वहीं पर रूक जाएं, तब हम भूल जाते हैं कि यह एक पवित्र पुस्तक है जिसे परमेश्वर ने न केवल आरम्भ में प्रेरित किया, परन्तु निरन्तर हमारे हृदयों में इसे प्रेरित करता रहता है, ताकि मेरी मानवीय भ्रमपूर्ण स्थिति, मेरा मानवीय पाप से भरा होना पवित्रशास्त्र की सच्चाई के ऊपर विजय को प्राप्त न कर ले, पवित्र आत्मा को निरन्तर मुझमें कार्य करता रहना होगा जब पाठक और व्याख्याकार इस बात को समझते हैं कि यह परमेश्वर है जो मुझसे इस संदर्भ के द्वारा कुछ कहना चाहता है

-डॉ जॉन औस्वाल्ट

व्याख्या करने में पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है? यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्योंकि एक बात यह है कि, पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया, इसलिए स्पष्ट है कि हमें इसे अपनी जानकारी में रखना चाहिए, कि पवित्रशास्त्र का कौन मुख्य लेखक है और हम उसके बारे में क्या जान सकते हैं। यह पवित्र आत्मा है जो हमें वचन के द्वारा यह सिखाता है कि परमेश्वर कौन है। दूसरी बात यह है कि पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र की सही समझ के लिए पूर्णतया आवश्यक है। 1 कुरिन्थियों 2 में इसी बात के बारे में चर्चा करती है। आयत 14 में वहाँ ऐसा कहा गया है कि:

परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जाँच आत्मिक रीति से होती है (1 कुरिन्थियों 2:14)।

यह वह व्यक्ति है जो कि पवित्र आत्मा है। इसलिए हमें परमेश्वर से कहना चाहिए कि वह पवित्र आत्मा को भेज दे और उसकी आत्मा से हमें भर दे ताकि हम विश्वासयोग्यता से उसे प्राप्त कर सकें जिसे वह उसके वचन के द्वारा हमें सिखा रहा है।

-डॉ वर्न पोईथरस

इस सच्चाई के ऊपर देख लेने के बाद कि पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र का दिव्य स्रोत है, जैविक प्रेरणा के सिद्धान्त का दूसरा पहलू जिसका हम यहाँ उल्लेख करेंगे वह यह है कि पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र का निर्माण करने में मानवीय तरीकों को प्रयोग किया।

मानवीय तरीके

कभी कभी मसीही विश्वासी इस तरह से व्यवहार करते हैं कि मानो वे ऐसी वरीयता देते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल को परोक्ष मे ही दे दिया जैसे कि मोरमन सम्प्रदाय के मसीही विश्वासी और मुसलमानों का यह दावा है कि उन्होंने अपनी पवित्र पुस्तकों को इसी तरीके से प्राप्त किया। मोरमन यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने मोरमन की पूरी पुस्तक को ज्यों का त्यों जोसेफ स्मिथ के ऊपर उतार दिया, और इस्लाम में कुरआन के बारे में ऐसा ही दावा किया गया है कि वह स्वर्ग से ज्यों की त्यों ही उतरी थी। परन्तु बाइबल को परमेश्वर ने ऐसे नहीं दिया।

इसकी बजाए, परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को मानवीय लेखकों के तरीकों को उपयोग करके रचा; उसने मानवीय प्राणियों के वरदानों और योग्यताओं के द्वारा स्वयं को प्रकाशित किया। इसमें बिल्कुल भी सन्देह नहीं है कि, पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र में मानवीय लेखकों की किसी भी तरह की उपस्थिति या प्रभाव को विलुप्त कर सकता था। वह प्रत्येक संदर्भ को प्रकाशित कर सकता था ताकि हम ऐसा नहीं कह पाते कि कोई हिस्सा किसी एक व्यक्ति के द्वारा या कोई अन्य हिस्सा किसी और लेखक के द्वारा लिखा गया था। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसने अपने असीमित ज्ञान में, मानवीय लेखकों के व्यक्तित्वों, अभिप्रायों, अवधारणाओं के द्वारा इन्हें सम्मिलित और इनके माध्यम से कार्य करना चुना। इसलिए, पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी व्याख्या में पवित्र आत्मा पर निर्भर होने के हमारी भागीदारी उस तरीके का सम्मान करना है जिसमें पवित्रशास्त्र जैविक तौर पर प्रेरणा प्रदत हुआ है, और उन मानवीय लेखकों के ऊपर भरोसा करना है जो प्रेरणा पाए हुए थे। इस तरह, जब हम बाइबल की व्याख्या उस तरह से करना चाहते हैं जिस तरह से इसकी अपेक्षा हमारे लिए की गई है, तो हमें यह समझना चाहिए कि पवित्र शास्त्र विभिन्न लोगों के द्वारा लिखा गया था, और यह कि वह मानवीय लेखक होने की विविधता को प्रतिबिम्बित करता है।

उदाहरण के लिए, सुसमाचार लेखक मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने लगभग मूल रूप से यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की एक जैसी ही घटनाओं को लिखा है। परन्तु उनकी पुस्तकें एक समान नहीं है। मत्ती मरकुस से भिन्न है। मरकुस लूका से भिन्न है। लूका यूहन्ना से भिन्न है। और यह पवित्रशास्त्र की कमजोरी नहीं है। यह पवित्र आत्मा के उस तरीके का उत्पाद है जिसमें उसने पवित्रशास्त्र को प्रेरणा देना चुना।

क्योंकि पवित्रशास्त्र जैविक तौर पर प्रेरणा प्रदत थे, हमें सदैव दोनों अर्थात् उसके दिव्य लेखक होने और उसके मानवीय लेखक होने को स्वीकार करना चाहिए। जब हम स्वयं को बाइबल की व्याख्या करने के लिए तैयार करते हैं, तो यह बात ध्यान में रखना अति महत्वपूर्ण होता है कि हम उस बात का पता लगाना चाहते हैं जिसे पवित्र आत्मा ने वहाँ लिखा है। परन्तु यदि हम वहीं पर रूक जाएं, तो हमारी तैयारी पूर्ण नहीं हुई है। हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि कैसे आत्मा मानवीय प्राणियों के माध्यम, उनके व्यक्तित्व के माध्यम, उनके अनुभवों, दृष्टिकोणों और किसी बात पर जोर दिए जाने के माध्यम से कार्य करता है। पवित्रशास्त्र का प्रत्येक शब्द परमेश्वर का शब्द है। परन्तु परमेश्वर हम तक मानवीय प्राणियों के द्वारा आता है जो कि आत्मा के द्वारा प्रेरणा पाए हुए थे, और उन्होंने विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से लिखा। इस लिए, हमें सदैव स्वयं को इस समझ के साथ

तैयार करना चाहिए कि परमेश्वर के आत्मा ने बाइबल के विभिन्न मानवीय लेखकों के माध्यम से विभिन्न तरीकों से बात की।

यह देख लेने के बाद कि कैसे पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के लिए हमारी निर्भरता पवित्र आत्मा के ऊपर आवश्यक है, आइए अब हम अपने ध्यान को उस तरीके की ओर मोड़ें जिसमें हमारी निर्भरता उसके निरन्तर चलते हुए प्रबोधन के कार्य के ऊपर भी है।

प्रबोधन

बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतन्त्र विज्ञान के संदर्भ में, प्रबोधन की परिभाषा ऐसे दी जा सकती है:

एक मानवीय प्राणी को पवित्रशास्त्र की उचित समझ को सूचित करने के लिए पवित्र आत्मा का कार्य

हम दो कार्यों में भेद कर सकते हैं। एक है प्रेरणा का कार्य जहाँ पर पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र के वास्तविक मानवीय लेखकों के पास आता है और उन्हें सशक्त करता है ताकि वह जो कुछ लिखे वह परमेश्वर का वचन हो, जिसे परमेश्वर ने बोला है और यह नहीं कि जो कुछ मानवीय प्राणी बोल रहे हैं। प्रबोधन वहाँ होता है जहाँ पवित्र आत्मा हमारे साथ खड़ा होता है। वह मसीही विश्वासियों में वास करता है और हमारे मनों को समझ प्राप्त करने और जो कुछ उसने बाइबल में प्रेरित किया है उसे प्राप्त करने के लिए खोलता है।

-डॉ वर्न पोईथरस

उसके प्रबोधन के द्वारा, पवित्र आत्मा हमें उसके वचन के ज्ञान को प्रदान करता है। और यह ज्ञान विशुद्ध रूप से संज्ञानात्मक नहीं होता है। यह हमारी कल्पनाओं, अंतर्ज्ञान, भावना, इच्छा, अभिलाषा, नैतिक विवेक – हमारे किसी भी अंग को प्रभावित करता है, जो पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी समझ को आत्मा के द्वारा प्रबोधित करने में योगदान देता है।

कभी कभी मसीही विश्वासी यह अनुमान लगाते हैं कि कि यदि हम मात्र सावधानी से यह सोचें, तो हम यह समझ प्राप्त करने के लिए सक्षम हो जाएंगे कि पवित्रशास्त्र क्या शिक्षा देता है। परन्तु वास्तव में, मानवीय प्राणी पाप के द्वारा इतने ज्यादा प्रभावित हैं कि हम स्वयं से परमेश्वर की बातों को नहीं समझ सकते हैं। हमें स्वयं परमेश्वर – अर्थात् पवित्र आत्मा - की अत्यधिक आवश्यकता है – कि वह हमें प्रबोधित करे। सुनिए पौलुस ने आत्मा के प्रबोधन के बारे में 1 कुरिन्थियों 2:11-13 में कैसे कहा है:

मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता, केवल मनुष्य की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं (1 कुरिन्थियों 2:11-13)।

यहाँ, पौलुस यह वर्णन करता है कि आत्मा के कार्य के बिना, हमारे पास परमेश्वर के विचारों को जैसा पकड़ना चाहिए वैसा पकड़ने की कोई आशा नहीं है। इस लिए ही आत्मा का व्यक्तिगत् प्रबोधन पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या के लिए अति महत्वपूर्ण है।

आत्मा का प्रबोधन एक ऐसा विषय है जिसे की पूरी तरह से कदाचित् ही सम्बोधित किया गया है। परन्तु जॉन ओवेन, जो कि 1616 से लेकर 1683 के समयकाल में रहे, के प्रसिद्ध लेखन कार्य में इसके लिए विस्तार सहित महत्वपूर्ण तरीके से उल्लेख किया गया है। ओवेन के लेखन कार्य, *पवित्रशास्त्र से प्रमाणित हुआ आत्मिक प्रबोधन* (स्पिरीचुअल इलुमिनेशन प्रवुड फ्राम स्रिकरिप्चर) में, उसने पवित्र आत्मा के प्रबोधन के कार्य को इस तरह से सारांशित किया है:

सभी ईश्वरीय सच्चाइयाँ आवश्यक रूप से जाननी चाहिए, और विश्वास की जानी चाहिए, ताकि हम परमेश्वर में विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ जीवन यापन करें, या उसके पास आएँ, और मसीह में बने

रहें; इसी के साथ पथभ्रष्ट करने वालों से संरक्षित रहना, पवित्रशास्त्र में लिखे हुए हैं, या दिव्य प्रकाशनों में हमें प्रस्तावित किया हुआ है। इन्हें हम स्वयं से समझ नहीं सकते हैं, जब तक इन बातों का उल्लेख नहीं कर लिया जाता, क्योंकि यदि हम इन्हें समझते, तब यहाँ पर ऐसी कोई भी बात की आवश्यकता नहीं होती कि इन्हें हमें पवित्र आत्मा के माध्यम से सिखाया जाता। परन्तु यहाँ ऐसा है कि, वह हमें सभी बातों को सिखाता है, हमें समझने, पहचानने, और इन्हें स्वीकार करने के लिए सक्षम करता है।

ओवेन ने बुद्धिमानी से यह संकेत दिया है कि पवित्रशास्त्र हमें वह सब कुछ देता है जो हमें "परमेश्वर में विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ जीवन यापन करते" हुए "उसके पास आने, और मसीह में बने रहने" और "पथभ्रष्ट करने वालों से संरक्षित रहने" के लिए आवश्यक है। परन्तु यहाँ तक कि अविश्वासी भी स्वयं से बाइबल को समझने के लिए सक्षम हो सके, हम पवित्रशास्त्र को "स्वयं से समझ नहीं सकते हैं" जब तक कि इन "बातों का उल्लेख नहीं कर लिया जाता" यदि पवित्र आत्मा हमें इन्हें "समझने, पहचानने, और इन्हें स्वीकार करने के लिए सक्षम नहीं करता" है।

जब हम 2 तीमुथियुस 3:16 के बारे में बात करते हैं कि सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर-द्वारा बोला हुआ है, तो यह इस विचार की ओर संकेत करता है कि बाइबल प्रेरणा प्रदत है, या कदाचित् ज्यादा उचित यह कहना कि "साँस निकला हुआ है" – अर्थात् मुँह से बोला हुआ – अर्थात् परमेश्वर के हृदय से निकला हुआ, और इसलिए पवित्रशास्त्र स्वयं परमेश्वर के पास से ही निकल कर आता है। जब हम किसी को किसी से प्रेरित हुआ के बारे में बात करते हैं, तो हम उसके उत्साहित होने के बारे में या किसी चीज से पकड़े जाने के बारे में बात करते हैं, और शब्द "प्रबोधन" कुछ हद तक जो कुछ इस अवधारण में है, को प्रकट करता है, कि हमें पवित्र आत्मा की आवश्यकता है जिसने अचूकता से परमेश्वर के वचन को हमें समझ और श्रद्धा से भरा हुआ भय देने के लिए प्रेरित किया ताकि हमारे मन परमेश्वर की सच्चाई से प्रबोधित हो जाएँ, कि हम परमेश्वर के वचन की सच्चाई को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सकें।

-डॉ शिमौन विबर्ट

प्रेरणा वह है जो परमेश्वर ने उस समय उपयोग की जब उसने लेखक को प्रेरित किया, ताकि, हमें अब और ज्यादा प्रेरित होने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु हमें प्रबोधित होने के द्वारा, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर है, जो पवित्र आत्मा के माध्यम से, हमें प्रकाश को दे रहा है, हमें आत्मिक समझ दे रहा है और हमें सक्षम होने की योग्यता दे रहा है कि जो कुछ इन शब्दों में कहा गया है की समझ को प्राप्त करें।

- रेव्ह. थॉड जेम्स जूनीयर

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि पवित्र आत्मा पर निर्भरता हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण है, इसलिए आइए पवित्रशास्त्र की व्याख्या की हमारी तैयारी के लिए मानवीय प्रयासों की आवश्यकता की खोज करें।

मानवीय प्रयासों की आवश्यकता

हम मानवीय प्रयासों की आवश्यकता पर दो भागों में ध्यान देंगे। सबसे पहले, हम मानवीय प्रयासों के महत्व के ऊपर देखेंगे। और दूसरा, हम कुछ ऐसे प्रभावों का सर्वेक्षण करेंगे जो हमारे मानवीय प्रयासों की सूचना देते हैं। आइए सबसे पहले हम मानवीय प्रयासों के महत्वपूर्णता की ओर मुड़ें।

महत्व

अक्सर अधिकत्तर समयों में, सही-अर्थ निकालने वाले मसीही विश्वासी ये सोचते हैं कि बाइबल की व्याख्या में परमेश्वर के आत्मा का कार्य मानवीय प्रयासों के विपरीत होता है। यह सत्य है कि कई बार आत्मा हमारे प्रयासों से परे कार्य करता है, बिना उन प्रयासों के, यहाँ तक जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो उसके विरूद्ध भी। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो हमें मानवीय प्रयासों की कोई आवश्यकता नहीं होती है। सबसे सरल तरीका जिसमें आत्मा हमें प्रबोधित करता है, या हमारे साथ में संयोजित होता है, वह हमारी मेहनत से भरा हुआ कार्य है। इसी कारण, हमें मानवीय प्रयत्नों के लिए बाइबल की व्याख्या को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

घटाना नहीं चाहिए, जबकि उचित रीति से पवित्रशास्त्र को समझने के लिए मेहनत से भरा हुआ कार्य करना अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

दुर्भाग्य से, कुछ सम्प्रदायों में, सही-अर्थ निकालने वाले मसीह के अनुयायी, जब बाइबल का अध्ययन करने के लिए तैयारी करते हैं, तो हर उस बात को कम कर देते हैं जो कि मानवीय प्रयासों के जैसा दिखाई देता है। इसकी अपेक्षा, वे अक्सर "आत्मिक" दृष्टिकोण को प्राथमिकता देते हैं, जहाँ पर बाइबल के मूलपाठ का सन्देश सीधे ही परमेश्वर से निष्क्रिय पाठकों के पास आता है। ये विश्वासी सही तरीके से पवित्र आत्मा पर हमारी निर्भरता के महत्व को स्वीकार करते हैं। और हम इसके लिए उनकी प्रशंसा कर सकते हैं। परन्तु उनका मानवीय प्रयास को अनदेखा करना बाइबल आधारित नहीं है। जैसा कि पौलुस ने 2 तीमुथियुस 2:15 में लिखा है कि:

> **अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो (2 तीमुथियुस 2:15)।**

इस वचन में, पौलुस ने तीमुथियुस को उत्साहित किया कि वह ऐसा व्यक्ति बने जो कि सच्चाई के वचन को सही रीति से कार्य में लाता हो। परन्तु दिए हुए रूपक में पौलुस ने अपने दृष्टिकोण को सूचित किया है। तीमुथियुस को एक मेहनत से "काम करने वाला" व्यक्ति होना था। यहाँ पर पौलुस ने यूनानी शब्द *ईरगेट्स* का प्रयोग किया है, एक ऐसी शब्दावली जो अक्सर खेतों में कार्य करने वाले मजदूर के लिए प्रयोग की जाती है। और तीमुथियुस को अच्छी रीति से कार्य करना था, या जैसे कि कुछ अनुवादों में ऐसा आया है, कि उसे "मेहनती" होना था।

बाइबल के व्याख्याकार की तुलना एक मेहनती, कठोर-मेहनत करने वाले खेत के मजदूर के साथ करने के द्वारा, पौलुस तीमुथियुस को प्रोत्साहित करता है कि वह पवित्रशास्त्र के अध्ययन में अपनी पूरे प्रयासों को पूरी शक्ति के साथ लगा दे। परन्तु वास्तव में इसका सटीक क्या अर्थ है? और कैसे पवित्र आत्मा के ऊपर हमारी निर्भरता हमारे मानवीय प्रयासों के साथ एक दूसरे को प्रभावित करती है?

> **यदि बाइबल को समझना ऐसा कुछ है कि जो पवित्र आत्मा का कार्य है और ऐसा नहीं कि जिसे हम करते हों, तो फिर हम क्यों बाइबल की व्याख्या के साथ कार्य करने के लिए परेशान हो रहे हैं? और उसका उत्तर बहुत ही साधारण सा है। परमेश्वर हमारे आलस का हमें ईनाम नहीं देता है। परमेश्वर ऐसे सेवक की नियुक्ति नहीं करता है जो प्रचार के लिए तैयारी नहीं करता है। परमेश्वर के कार्य में सम्मिलित होने के लिए मेहनत की आवश्यकता है क्योंकि परमेश्वर न केवल हमारे द्वारा कार्य कर रहा है, वरन् वह हममें भी कार्य कर रहा है...बाइबल की व्याख्या की प्रक्रिया में, जो कुछ हो रहा है वह कोई एक सामान्य संज्ञानात्मक बात नहीं है जहाँ पर हम इस समझ को प्राप्त करने के लिए आ रहे हैं कि बाइबल क्या कह रही है, परन्त यहाँ पर पवित्रीकरण की प्रक्रिया भी है जिसे परमेश्वर हममें कर रहा है ताकि हम ऐसे लोग न बन जाएं जो केवल यह समझे कि यह विशेष संदर्भ क्या कह रहा है, परन्तु हम ऐसे लोग बन जाएं जो उस तरीके से ज्यादा सोचे जिसमें परमेश्वर चाहता है कि हम सोचें, वह तरीका जिसमें सोचने के लिए उसने रूपरेखा खींची है, उसके तरीके से बातों को होते हुए देखें।**
>
> **-डॉ कैरी विन्जान्ट**

पवित्र आत्मा के ऊपर निर्भरता का यह अर्थ नहीं है कि जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो उस समय हमें निष्क्रिय हो जाना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि दायित्वपूर्ण व्याख्या में कठोर मेहनत सम्मिलित है। हम यहाँ तक यह कह सकते हैं कि आत्मा पर निर्भरता में वह औजार और अवसरों की निर्भरता भी सम्मिलित है जिन्हें वह उपलब्ध करता है। आख़िरकार, पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र की रूपरेखा ऐसी बनाई जो मानवीय तरीकों के द्वारा सम्प्रेषण का कार्य करता है, जिसमें पाठक की मानवीय प्रयासों की भागीदारी भी सम्मिलित है।

वास्तव में, पवित्र आत्मा सामान्य तौर पर हमें उन प्रयासों के माध्यम से प्रबोधित करता है जिन्हें हम तैयारी में लगाते हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे हम सामान्य रूप से अपने शरीर के लिए भोजन खाने की प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त करते हैं, आत्मा विशेष रूप से हमारे पठन और अध्ययन की प्रक्रिया के द्वारा हमें वचन के लिए समग्र समझ प्रदान करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब, पवित्रशास्त्र के ज्यादात्तर पाठकों को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि बाइबल के कुछ हिस्से को अन्य हिस्सों की तुलना में ज्यादा मानवीय प्रयासों की आवश्यकता होती है। पैमाने के एक तरफ के अन्तिम छोर पर, कुछ संदर्भ तो इतना ज्यादा स्पष्ट होते हैं कि उन्हें बहुत समझने के लिए थोड़े प्रयास की आवश्यकता होती है। सदियों के मध्य, प्रोटेस्टेन्ट मतावलम्बियों ने यह सही माना है कि मुक्ति के लिए विश्वास करने और आज्ञा पालन करने के लिए आवश्यक बात पवित्रशास्त्र में इस स्थान या अन्य स्थान में इतनी ज्यादा स्पष्ट कर दी गई है कि लगभग सभी इसे समझ सकते हैं। जबकि पैमाने के दूसरी तरफ के अन्तिम छोर पर,पवित्रशास्त्र के कई हिस्से इतने ज्यादा कठिन हैं कि, उनमें से यहाँ तक कि कुछ पूरी तरह समझने में असम्भव हो।

परन्तु व्यवहारिक तौर पर बोलना, पवित्रशास्त्र के बहुस से संदर्भ इन दो चरम सीमाओं के बीच में आते हैं। पवित्रशास्त्र के सबसे ज्यादा स्पष्ट हिस्सों को सामान्य रूप से अपेक्षाकृत कम मानवीय प्रयास की आवश्यकता होती है। परन्तु जब हम पवित्रशास्त्र के कठिन संदर्भों के साथ सम्पर्क करते हैं, तो अक्सर मानवीय प्रयास के स्तर में वृद्धि करते हुए पर्याप्त तैयारी की आवश्यकता पड़ती है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या की तैयारी के लिए मानवीय प्रयासों की महत्वपूर्णता को पहचानने के साथ ही, यह हमें उन कुछ मुख्य प्रभावों के प्रति जागरूक करने में सहायता करती है जिन्हें परमेश्वर सामान्य तौर पर हमारे मानवीय प्रयासों पर लेकर आता है।

प्रभाव

यदि यहाँ पर कोई ऐसी बात है जो कि सही-अर्थ निकालने वाले बाइबल व्याख्याकारों के लिए आज के समय में रूकावट उत्पन्न करती है, तो वह यह है कि वे सोचते हैं कि वे पवित्रशास्त्र का अध्ययन उन तरीकों से कर सकते हैं जो उनके जीवनों पर बाहरी प्रभावों को प्रतिबिम्बित नहीं करते हैं। हम सोचते हैं कि किसी तरह हम अपने जीवन के अनुभवों से स्वयं छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं और सामान्य रूप से पवित्रशास्त्र के पास बिना किसी पूर्वाग्रही विचार से जा सकते हैं। परन्तु बाइबल की व्याख्या के लिए हमारे मानवीय प्रयासों के लिए स्मरण रखने के लिए एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि हम चाहे कितना भी ज्यादा कठिन मेहनत करने का प्रयास क्यों न करें, हमारा दृष्टिकोण सदैव पवित्रशास्त्र के प्रति अनगिनित प्रभावों से प्रभावित होता है। और जितना ज्यादा हम इन प्रभावों के प्रति जागरूक हैं, उतना ज्यादा उत्तम तरीके से हम इनको समझने की क्षमता रखते हैं चाहे यह सकारात्मक हो या नकारात्मक ही क्यों न हो, चाहे यह हमारी सहायता करता हो या फिर यह बाइबल की हमारी व्याख्या में बाधा उत्पन्न करता हो।

हम जब पवित्रशास्त्र की व्याख्या के प्रति अपनी तैयारी के लिए कठिन मेहनत करते हैं तो हमारे प्रयासों पर पड़ने वाले तीन मुख्य प्रभावों पर हम ध्यान देंगे। ये प्रभाव परस्परसम्बन्धी हैं, परन्तु हम सहजता के लिए सबका अलग अलग अध्ययन करेंगे। सबसे पहले हम पवित्रशास्त्र के श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीका करने के बारे में उल्लेख करेंगे।

श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीका करना

इस श्रृंखला के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, हम श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण की इस तरह से परिभाषित करेंगे:

बाइबल के मूलपाठ से अर्थ को निकालना

-विशेषकर चीजों को उनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, साहित्यिक रूपरेखा, व्याकरण और शब्दावली, धर्मवैज्ञानिक ढाँचे और इसी तरह की अन्य बातों के प्रयोग में देखते हुए। यद्यपि यहाँ ऐसी कई बातें हैं जिन्हें हम श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीका करने के बारे कह सकते हैं, परन्तु हमारे अध्ययन के लिए, हम केवल उस श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीका के बारे में संकेत करना चाहते हैं जिसे हमने अतीत में किया है जो हमारी व्याख्या के लिए किए जाने वाले कार्य के लिए तैयारी करने में सहायता करती है।

पवित्रशास्त्र की टीका के बारे में हमारी प्रत्येक तरह की भागीदारी हमें बाइबल की आगे की व्याख्या करने के लिए तैयार करता है। बाइबल के सम्पर्क से हम जो ज्ञान, कौशल और व्यवहार को विकसित करते हैं जब हम पवित्रशास्त्र के पास अगली बार जाते हैं तो उसे वह प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक बार जब हम बाइबल की शब्दावली, और व्याकरण को पढ़ते हैं, तो हम पवित्रशास्त्र के इन पहलूओं को और ज्यादा दायित्वपूर्ण तरीके से प्रयोग करने की हमारी क्षमता में वृद्धि करते हैं। जब हम पवित्रशास्त्र के साहित्यिक प्रकारों को समझने के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

लिए कार्य करते हैं, जैसे कि आख्यान, व्यवस्थाएँ, कविता, भविष्यवाणियाँ, नीतिवचन और इसी तरह की अन्य बातें, तो हम अगली बार इन्हें समझने के लिए ज्यादा सुसज्जित हो जाते हैं। और जब हम बाइबल के पुरातन इतिहास के बारे में सीखते हैं, तो हम पवित्रशास्त्र के पास आगे की समझ पाने के लिए तैयार करके आते हैं। पवित्रशास्त्र की टीका करने में डाला गया प्रत्येक प्रयास हमें आगे के अध्ययन के लिए तैयार करने में सहायता करता है।

व्याख्याशास्त्र में दूसरे प्रकार का प्रभाव जो हमारे मानवीय प्रयास पर प्रभाव डालता है वह समाज में हमारा परस्पर व्यवहार है।

परस्पर व्यवहार

अन्य लोगों के साथ परस्पर व्यवहार एक सबसे प्रभावशाली तरीका है, परन्तु इसे अक्सर कम करके आंका जाता है, ये पवित्रशास्त्र को समझने के लिए हमारे प्रयासों को प्रभावित करता है। हम सभी बाइबल की प्रत्यक्ष रूप से टीका करने में सम्मिलित होना चाहते हैं। परन्तु भले ही हम इस बात को पहिचाने या नहीं, बाइबल की व्याख्या अन्य लोगों के साथ हमारे परस्पर व्यवहार के द्वारा प्रभावित हुए बिना करना लगभग असम्भव सा है। और यह एक अच्छी बात है।

अन्य लोगों, दोनों अर्थात् वर्तमान संसार से और अतीत से, ने पवित्र आत्मा से महान् वरदानों और आत्मबोध को प्राप्त किया था जो हमारी पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में सहायता कर सकता है। उन्होंने मूल्यवान संदर्भ वाले साहित्य को उत्पन्न किया है। वे हमें ईश्वरीय परामर्श को देते हैं। वे हमें बाइबल की भाषा और साहित्य और इतिहास और सभी तरह की अन्य बातों को सिखाते हैं जो हमें वचन को समझने और इसे लागू करने के लिए सहायता करती है। यहाँ तक जिस बाइबल को हम अपने हाथों में पकड़ते हैं वह हमारे पास अन्य लोगों के द्वारा आई है। वह हमारे पास विद्वानों, अनुवादकों, सम्पादकों और प्रकाशकों के काम के माध्यम से आई है।

इसके अलावा, हममें से ज्यादात्तर विशेष मसीही समुदायों से आते हैं जहाँ पर हम अपनापन का अनुभव करते हैं, जिसमें हमारी कलीसिया और हमारे सम्प्रदाय सम्मिलित हैं। ये समुदाय सामान्य परम्पराओं को साझा करते हैं जो पवित्रशास्त्र के हमारे पठन और समझने के तरीके को प्रभावित करती हैं। और जिस सहयोग करने वाली बात को हम पास्टरों, शिक्षकों और अन्य व्यक्तिगत् विश्वासियों से प्राप्त करते हैं वह भी हमें कई तरीकों से सहायता प्रदान करती है।

हम अन्यों की सफलताओं, विफलताओं और आत्मबोध के माध्यम से कई मूल्यवान बातों को सीखते हैं। हम अन्यों से जो हमारे जैसे ही हैं और वे जो हमसे भिन्न हैं, वे जो अतीत में हैं और वे जो वर्तमान में हैं और वे जिन्हें हम व्यक्तिगत् तौर पर जानते हैं और वे जिनसे हमने कभी मुलाकात नहीं की है, से सीखते हैं। चाहे हम इसे पहिचाने या नहीं, पवित्रशास्त्र के बारे में हमारी सारी व्याख्या अन्य लोगों के द्वारा गहन रूप से प्रभावित होना चाहिए और होती है।

तैयारी के लिए हमारे प्रयासों के ऊपर तीसरा मुख्य प्रभाव हमारा व्यक्तिगत् मसीही अनुभव है।

अनुभव

यह कहना सही है कि हमारे जीवनों में मसीही विश्वासी होने के नाते जिन भी बातों के साथ हमारा सामना होता है वह हमारे मसीही जीवन के अनुभव का हिस्सा है, जिसमें ऐसी बातें भी सम्मिलित हैं जिन्हें हमने पहले श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीका करने और अन्यों के साथ हमारे परस्पर व्यवहार के तौर पर सम्बोधित किया है। हमारे अध्याय के इस स्थान पर हम अपने ध्यान को उन बातों के ऊपर केन्द्रित करना चाहते हैं जिन्हें हम सामान्य तौर पर सोचते हैं जब हम इनके बारे में अपने व्यक्तिगत् मसीही जीवन में या परमेश्वर के साथ हमारे जीवन यापन करने के समय बात करते हैं। मसीही जीवन यापन करने के समय ये व्यक्तिगत् पहलू पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्याओं में विभिन्न तरीकों से योगदान देते हैं।

उदाहरण के लिए, हमारे मसीही जीवन का विकास और पवित्रीकरण बाइबल की व्याख्या में हमारी क्षमता में वृद्धि करता है; जिस तरह से हम जीवन यापन करते हैं वह पवित्रशास्त्र को समझने की हमारी योग्यता को गहनता से प्रभावित करता है। जब मसीह के अनुयायी विश्वासयोग्य होते हैं – उन तरीकों से सोचते, कार्य करते और महसूस करते हैं जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है – तो वे अक्सर यह पाते हैं कि वे पवित्रशास्त्र को और भी ज्यादा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सीखने के लिए उत्तम तरीके से तैयार हैं। परन्तु यदि उन्होंने अपने जीवनों को परमेश्वर के वचन के अनुरूप नहीं किया, तो उनका बाइबल का अध्ययन करना अक्सर अशुद्ध अर्थ और दुरुपयोग की ओर ले चलता है।

हमारे अतीत के अनुभव भी दायित्वपूर्ण तरीके से व्याख्या करने की हमारी क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। सभी विश्वासियों के पास उनके अनुभव होते हैं जो उनकी सोच, महसूस करने और व्यवहार के तरीकों को आकार देते हैं। और ये अनुभव पवित्रशास्त्र की व्याख्या के लिए हमारे प्रयासों को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो समृद्ध वातावरण में पल कर बड़ा हुआ है, के लिए लूका के सुसमाचार में व्यक्त गरीब व्यक्ति के लिए दी हुई चिन्ता को समझना कठिन जान पड़े। एक व्यक्ति जो किसी ऐसी संस्कृति में पल कर बड़ा हुआ है जो सम्मान पर ज्यादा जोर देती है के लिए शर्म से सम्बन्धित संदर्भों को समझना आसान होगा।

इसके अलावा, प्रत्येक व्यक्ति की भिन्न व्यक्तिगत् गुण और कमजोरियाँ, भिन्न योग्यतायें और कमज़ोर विषय, पवित्र आत्मा से भिन्न वरदान प्राप्त होते हैं, और इसमें कोई सन्देह नहीं, भिन्न तरह के पाप भी। इस तरह से या उस तरह से, ये सभी बातें हमारी क्षमता को उस समय प्रभावित करती हैं जब बात पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने और इसे जीवन में लागू करने के बारे में आती है।

हमारे पाप सामान्य सत्य को, जिसमें बाइबल भी सम्मिलित है, को समझने की हमारी क्षमता को बाधित करते हैं। बाइबल कहती है कि हम हमारे पाप से भरे हुए स्वभाव की अधर्मिता से सत्य को दबा देते हैं। और इसलिए हमारे पापी स्वभाव का विकृत प्रभाव सत्य को समझने की हमारी क्षमता पर है। और इसलिए जब हम बाइबल के पास आते हैं, पाप के ऐंठे हुए प्रभाव के बिना इसकी समझ एक ऐसी बात है जिसे पवित्र आत्मा हममें सक्षम करता है, जिसके लिए हम उसके बहुत अधिक आभारी हैं।

-डा के. ऐरिक थियोनॉस

पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या को पाप बाधित कर सकता है क्योंकि लोगों में पवित्रशास्त्र में उस बात को प्राप्त करने की प्रवृति है जिसे वे प्राप्त करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ सदियों पहले गुलामों के स्वामी पवित्रशास्त्र की इस तरह की व्याख्या को लेकर आए जो कि गुलामी प्रथा को न्यायसंगत ठहराता था। ऐसा करना उनके आर्थिक हितों के लिए था, इसलिए वे चाहते थे कि – यदि वे गुलामों को कभी प्रचार करके की अनुमति देंगे - तो वे केवल इफिसियों 6:5 से ही प्रचार कर सकते हैं जहाँ पर गुलामों को उनके स्वामियों की आज्ञा पालन करने के लिए कहा गया है। वे 6:9 पर कोई ध्यान नहीं देंगे जहाँ पर ऐसा कहा गया है कि, "हे स्वामियों, तुम भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो।" मेरे कहने का अर्थ है कि, यदि आप वास्तव में इसे गंभीरता से लेते हैं – अर्थात् यदि स्वामियों को वास्तव में अपने गुलामों की सेवा करनी थी – तो गुलाम प्रथा ज्यादा दिन तक बनी रहने वाली नहीं थी। यह एक तरह से आर्थिक प्रोत्साहन को नष्ट कर देती है। परन्तु जब लोगों के पास पवित्रशास्त्र के पास आने के लिए केवल एक ही कार्यसूची हो और वे जिस तरह से जीवन यापन करते हैं उसे न्यायसंगत ठहराने का प्रयास करते हैं, तो वे पवित्रशास्त्र के पठन को उसी तरीके से पढ़ेंगे। अब, कई बार लोगों के पास इसके विपरीत समस्या है। वे एक ऐसी संस्कृति से आते हैं जहाँ पर सदैव वे दोष लगाने की अपेक्षा करते हैं या वे निन्दा की अपेक्षा करते हैं, तो वे भी पवित्रशास्त्र को उसी तरीके से पढ़ते हैं। हमारे पूर्वधारणाओं के आलोक में पवित्रशास्त्र को पढ़ने के बजाए, हमें चाहिए कि, जितना ज्यादा सम्भव हो, मूलपाठ के सन्देश को सुनने का प्रयास करना चाहिए जो हमारे लिए वास्तव में दिया गया है।

-डॉ क्रेग एस. किन्नर

सारांश

व्याख्या के लिए हमारी तैयारी पर इस अध्याय में, हमने तैयारी से सम्बन्धित दो महत्वपूर्ण पहलुओं को देखा जिन्हें हमें पवित्रशास्त्र की व्याख्या से पहले करना चाहिए। हमने जैविक प्रेरणा और आत्मा के प्रबोधन के सिद्धान्तों के संदर्भ में पवित्र आत्मा पर हमारी निर्भरता पर ध्यान केन्द्रित किया है। और हमने मानवीय प्रयासों की आवश्यकता को मानवीय प्रयास की महत्वपूर्णता और कुछ प्रभावों के सर्वेक्षण पर जोर देकर देखने के द्वारा किया है जिन्हें परमेश्वर सामान्य तौर पर हमारे व्याख्या करने के प्रयासों पर ले कर आता है।

बाइबल की व्याख्या की तैयारी में दोनों अर्थात् पवित्र आत्मा पर निर्भरता और मानवीय प्रयासों की एक बहुत बड़ी मात्रा की आवश्यकता होती है। हमें पवित्रशास्त्र के पास, पवित्र आत्मा के प्रति विवेकपूर्ण हो, प्रार्थनापूर्वक तरीके से अधीन होते हुए आना चाहिए क्योंकि उसने पवित्र शास्त्र को प्रेरित किया है और क्योंकि पिता ने उसे हमारे मनों, हृदयों को पवित्रशास्त्र की समझ के लिए प्रबोधित करने के लिए भेजा है। परन्तु उसी समय, परमेश्वर ने यह ठहराया है कि हम अपने सबसे उत्तम प्रयासों के द्वारा, पवित्रशास्त्र को अपनी जीवन यात्रा में अपने जीवन के प्रत्येक कदम में इसका पठन् करने, इसका अध्ययन करने, अन्यों के साथ परस्पर व्यवहार करने और इसके जीवन में लागू करने के लिए लगाते रहें। पवित्रशास्त्र की व्याख्या करना एक जटिल परियोजना है जिसके पीछे हमें अपने पूरे जीवनकाल में चलते रहना चाहिए, इसलिए हमें पूरी तरह से जितना ज्यादा सम्भव हो उतनी सावधानी से तैयारी करनी चाहिए। जितना ज्यादा हम दोनों अर्थात् परमेश्वर के आत्मा और हमारे मानवीय प्रयास के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित करते हैं, उतना ज्यादा उत्तम तरीके से हम बाइबल की व्याख्या करने के लिए तैयार हो जाएंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम